ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 159-161

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

जयप्रकाश नारायण एक क्रांतिकारी संत

1. डॉ0 अर्चना श्रीवास्तव
2. डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव

1. शिक्षा शास्त्र, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुदिष्टपुरी– रानीगंज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received-26.11.2023, Revised-02.12.2023, Accepted-07.12.2023 E-mail: rksharpur1974@gmail.com

सारांश: *जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर, 1902 को हुआ। वे अपने छः भाई–बहनों में पिता हरसूदयाल एवं माता फूलरानी देवी की चौथी संतान थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अनेक स्थानों पर हुई जहाँ उनके पिता जिलादार (राजस्व अधिकारी) के रुप में पदस्थापित रहे। आखिर में उनका नामांकन पटना कॉलेजियट स्कूल के वर्ग सात में हुआ।*

1919 ई. में जयप्रकाश ने हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की और उनका नामांकन विज्ञान के छात्र के रुप में पटना कॉलेज में हुआ। इस समय प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ था और देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने का उफान चरम पर था। नरम दल और गरम दल दोनों के नेता अपने–अपने तरीकों से देश को आजाद कराने के प्रयास में थे। जयप्रकाश इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा पोषित पटना कॉलेज का त्याग कर दिया और कांग्रेस द्वारा स्थापित सामानंतर शिक्षा विद्यापीठों में एक बिहार विद्यापीठ से इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की।

कुंजीभूत शब्द– राजस्व अधिकारी, पदस्थापित, नामांकन, जंजीरों, नरम दल, गरम दल, सामानंतर शिक्षा, सामाजिक बदलाव।

आगे की पढ़ाई के लिए इन्हें बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय जाना था, लेकिन वे अंग्रेज सरकार द्वारा वित्तपोषित संस्थान में पढ़ना नहीं चाहते थे। अंततः बीस वर्ष की आयु में उन्होंने अमेरिका जाकर अध्ययन जारी रखने की निर्णय लिया।

अमेरिका में उनका जीवन अत्यंत संघर्षमय रहा और उन्हें कई छोटी–मोटी नौकरियाँ करनी पड़ी। देश की आजादी के महत्व को समझते हुए उन्होंने विज्ञान के बदले मुख्य विषय के रुप में समाजशास्त्र और सहायक विषय के रुप में अर्थशास्त्र को स्नातक की पढ़ाई के लिए रखा। 1926 में उन्होंने ओहियो विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। स्नातकोत्तर में उनके थीसीस का विषय था 'सोशल वैरियेशन' (सामाजिक बदलाव)। तत्पश्चात् उन्होंने पी–एच.डी. की तैयारी शुरु की, परन्तु पारिवारिक कारणों से उन्हें 1929 में स्वदेश लौटना पड़ा।

उस समय प्रभावती जी, जिनसे जयप्रकाश का विवाह अमेरिका जाने के पूर्व हो चुका था, साबरमती आश्रम में बापू की पुत्री की भांति रह रही थी। गांधी की प्रेरणा से वे गांधी जी एवं प्रभावती के साथ कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में शामिल हुए और कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।

1931 में द्वितीय गोलमेज वार्ता की विफलता के बाद अंग्रेजों द्वारा कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया और नेहरु समेत सभी बड़े नेताओं को जेल में डाल दिया गया। इसी दौरान ब्रिटिश इंडिया लीग का प्रतिनिधि मंडल भारत आया और कांग्रेस ने जयप्रकाश का अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया, परन्तु जयप्रकाश को भी गिरफ्तार कर लिया गया और अखबारों में सुर्खियां लगीं 'कांग्रेस का दिमाग गिरफ्तार'।

कुछ समय बाद 1934 ई. में कांग्रेस में 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' (सी.एस.पी.) नामक एक नये धड़े का जन्म हुआ, जिसके नेता हुए – जयप्रकाश नारायण। इसका उद्देश्य था– देश की आजादी के साथ–साथ संभावित सत्ता में समाजवादी मूल्यों की स्थापना। 1937 के असेम्बली आम चुनावों में सी.एस.पी. के समर्थन से कांग्रेस को बड़ी सफलता मिली और उसने मंत्रीमंडल का गठन किया। जयप्रकाश ने इस बात पर इसका विरोध किया कि अभी जेलों में राजनीतिक बंदी हैं, उन्हें रिहा करो या रिजाइन करो – 'रिलीज और रिजाइन'। इससे कांग्रेस और जयप्रकाश के बीच मतभेद हुआ और दूरियाँ बढ़ने लगी।

अब जयप्रकाश किसानों की ओर मुड़ें, किसानों की बड़ी–बड़ी सभायें की और 'बकास्त आंदोलन' चलाया, जो किसान संघर्ष के इतिहास में एक मील का पत्थर है।

1940 ई. की सर्दियों में जयप्रकाश को गिरफ्तार कर पहले चाइबासा एवं उसके बाद हजारीबाग जेल में डाल दिया गया, जहाँ उनकी मुलाकत वामपंथी नेताओं से हुई। वे जयप्रकाश से नेहरु–गांधी का मित्र होने के कारण खीजे रहते थे। उस समय उन्होंने तत्कालीन अखबारों में अनेक विचारोत्तेजक लेख लिखे, जहाँ लेखक के नाम की जगह 'एक कांग्रेसी समाजवादी' लिखा रहता था।

कुछ महीनों बाद वे जेल से बाहर आये और पहले बापू, फिर सुभाष चन्द्र बोस से मिले। इसके बाद बिहार लौट कर स्वामी सहजानंद सरस्वती द्वारा चलाये जा रहे किसान आंदोलन के कार्यों में व्यस्त हो गये।

पुनः उन्हें बंबई में गिरफ्तार कर पहले देवली कैंप और फिर हजारीबाग जेल भेज दिया गया। अक्टूबर 1941 में प्रभावती जी जयप्रकाश से मिलने जेल में गयी और जयप्रकाश ने उन्हें पत्र पकड़ाया, जो जेल के अधिकारियों द्वारा जब्त कर लिया गया। इन पत्रों को अखबारों में बढ़ा–चढ़ा कर 'गांधीवादियों की करतूत' नाम से छापा गया और जयप्रकाश को गुप्त रुप से सरकार के खिलाफ षड्यंत्रकारी बताया गया। इन पत्रों का प्रभाव बिल्कुल वैसा नहीं हुआ जैसा अंग्रेजी सरकार ने सोचा था।

08 अगस्त, 1942 को गांधी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। इस समय जयप्रकाश को देवली जेल से हजारीबाग जेल स्थानांतरित किया जा चुका था। 09 अगस्त के बाद गांधी समेत सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। अंग्रेजी सरकार युद्ध में फंसी थी, इसी का फायदा उठाने के लिए आंदोलन को तेज किया गया था। यह सब जानकारी मिलने पर जयप्रकाश ने जेल से पलायन की ठानी। दीवाली की रात जेल वार्डरों एवं पहरेदारों को चकमा देकर जयप्रकाश ने अपने साथी योगेन्द्र शुक्ल, सूरज नारायण सिंह, गुलाब

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

चन्द गुलाली, रामनंदन मिश्र एवं शालीग्राम सिंहा के साथ सतरह फीट ऊँची जेल की दीवार फांदकर भाग निकले।

जेल से बाहर आते ही वे अपने उद्देश्य को हासिल करने में लग गये और एक ही लक्ष्य रखा पूरी व्यवस्था को ठप्प कर फिरंगी सरकार को धराशायी कर देना। उन्होंने 26 जनवरी, 1943 को स्वाधीनता दिवस घोषित कर बम फेंकने और जगह–जगह तोड़–फोड़ का कार्यक्रम बना लिया। इसी क्रम में नेपाल पहुँच कर उन्होंने 'आजाद दस्ता' का गठन किया, जिसे वे सुभाष चन्द्र बोस के 'आजाद हिन्द फौज' के साथ जोड़कर एक मजबूत दस्ता बनाना चाहते थे। परन्तु सुभाष चन्द्र बोस उनका संपर्क नहीं हो पाया।

नेपाल में वे अलग–अलग नामों एवं भेष में भूमिगत आंदोलन चला रहे थे। नेपाल में दबिश बढ़ने पर वे अमृतसर गये, जहाँ वे पहचान लिए गये और 18 सितंबर, 1943 को लाहौर किला जेल भेज दिये गये। लाहौर जेल उस समय अमानवीय यातनाओं के लिए कुख्यात था और जयप्रकाश ने अपनी पुस्तक 'लाहौर किले मे' जेल में दी जानेवाली यातनाओं का वर्णन करते हुए इसे 'टॉर्चर हाउस' लिखा।

लाहौर जेल में जयप्रकाश को अनेक यातनायें दी गई। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सारी गतिविधियां वे निजी स्तर पर चला रहे थे, न कि कांग्रेस की ओर से। उस समय वहाँ लोहिया भी बंद थे। जनवरी, 1945 में उन्हें और लोहिया दोनों को आगरा जेल भेज दिया गया। आगरा जेल में उन्हें एक गंदे सेल में रखा गया जहाँ फर्निचर या अन्य व्यक्तिगत सामान तो नाममात्र के थे। आगरा जेल में उनसे मिलने आये भारत सरकार के गृह सदस्य ने कहा कि यदि वे आश्वासन दें कि आजादी के लिए हिंसा का मार्ग नहीं अपनायेंगे, तो उन्हें छोड़ दिया जायगा। परन्तु जयप्रकाश ने इससे इंकार कर दिया। अंततः 11 अप्रैल, 1946 को 31 महिने की कैद के बाद उन्हें रिहा कर दिया गया।

16 मई, 1946 की कैबिनेट मिशन ने अपनी योजना प्रकाशित की और देश के विभाजन को ठुकरा दिया। परन्तु मिशन की योजनाओं के विपरीत लॉर्ड माउन्टबेटेन ने भारत संघ से अलग पाकिस्तान के निर्माण का निर्णय लिया जिसमें कांग्रेसियों और नेहरु की खुली सहमति थी। गांधी ने इसे रोकने की हरचंद कोशिश की परन्तु कांग्रेस ने इसे अस्वीकार कर दिया। अंत में जून 1947 में गांधी ने जयप्रकाश से अपने विचारों के साम्य को देखते हुए नेहरु से जयप्रकाश को कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित करने को कहा। परन्तु नेहरु ने इंकार कर दिया और राजेन्द्र प्रसाद कांग्रेस के अध्यक्ष बनाये गये।

इसके बाद जयप्रकाश के रास्ते नेहरु से अलग हो गये और जयप्रकाश ने कांग्रेस से भी किनारा कर लिया। 1947 में आजादी की घोषणा से पहले फरवरी में ही लोहिया की अध्यक्षता में हुए अधिवेशन में 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' से कांग्रेस शब्द हटाकर 'सोशलिस्ट पार्टी' बना दी गई थी।

फरवरी 1953 में नेहरु ने सोशलिस्ट पार्टी के साथ समझौते का प्रस्ताव रखा। पार्टी ने जयप्रकाश को नेहरु से वार्ता के लिए अधिकृत किया। जयप्रकाश ने अपने सैद्धांतिक मतभेदों के बारे में नेहरु को लंबा पत्र लिखा और राष्ट्रीय नीति में सुधार लाने की चौदह सूत्री कार्यक्रम के साथ अपने दल का पक्ष स्पष्ट किया, जो संविधान में संशोधन और मजदूर–किसान के हितों से संबंधित थी। नेहरु ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

इसके बाद उनमें भारी वैचारिक परिवर्तन हुआ। उन्होंने किसान–मजदूरों और भूमि समस्या का व्यवहारिक समाधान स्वैच्छिक भूदान में देखना आरंभ किया। 19 अप्रैल, 1954 को उन्होंने सक्रिय राजनीति से किनारा करने तथा 'भूदान' के लिए जीवनदान देने की घोषणा की। इसके बाद उन्होंने सुदुर पहाड़ी इलाकों का भ्रमण किया और गया जिले (वर्तमान नवादा जिला) के सोखोदेवरा में सर्वोदय आश्रम की स्थापना की, जिसे उन्होंने साबरमती आश्रम के तर्ज पर विकसित किया।

सर्वोदय के लिए जीवनदान देने के बाद भूदान से शुरु कर श्रमदान, ग्रामदान, जिलादान और फिर राज्यदान में डेढ़ दशक बीत गये। इसी क्रम में सत्तर के दशक के शुरुआत में जयप्रकाश ने मुजफ्फरपुर के मुसहरी में कैंप कर नक्सलियों के विरोध में शांतिपूर्ण आंदोलन प्रारंभ किया। वे नक्सलियों को दिखाना चाहते थे कि समस्याओं को हल करने का उनकी हिंसा और हत्या की पद्धति से अलग विकल्प भी समाज के पास है। यह उनके लिए अग्निपरीक्षा ही थी, क्योंकि पहली बार हिंसक उन्माद का शांति की शक्ति से सीधा मुकाबला था और जयप्रकाश इसमें सफल हुए।

इसके बाद जयप्रकाश के अथक प्रयास, सूझ–बूझ एवं दस्युओं से बातचीत कर उन्हें विश्वास में लेने के बाद 14 अप्रैल, 1972 को गांधी आश्रम, जौरा (मध्य प्रदेश) में चंबल के नामी दस्यु गिरोहों के सदस्यों के बयासी लोगों ने शस्त्र समर्पित किए और फिर इसके दूसरे दिन और इक्कासी दस्युओं ने आत्मसमर्पण किया। यह जयप्रकाश और देश दोनों के लिए एक बड़ी सफलता थी।

18 मार्च 1974 को महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और कुशिक्षा के खिलाफ छात्रों का आंदोलन शुरु हुआ और कुछ शरारती तत्वों ने सर्चलाइट अखबार के दफ्तर में आग लगा दी। स्वतंत्रता आंदोलन में इस अखबार के योगदान को देखते हुए जयप्रकाश इससे काफी मर्माहत हुए और कहा– "क्या इसी प्रकार बिहार को बर्बाद होने दिया जायगा। ऐसे में सरकार को बने रहने का हक नहीं है।" 08 अप्रैल, 1974 को पटना में लगभग दस किलोमीटर लंबा जुलूस निकला और 09 अप्रैल को पटना के गांधी मैदान में लगभग डेढ़ लाख की सभा को जयप्रकाश ने संबोधित किया और कहा– "पिछले सत्ताईस वर्षों से मैं चुपचाप सब–कुछ देख रहा हूँ, लेकिन अब किनारे खड़ा नहीं रह सकता। मैंने शपथ ली है कि इस स्थिति को आगे जारी नहीं रहने दूँगा ..."

जयप्रकाश ने विद्यार्थियों का आह्वान किया और कहा कि संपूर्ण क्रांति के लिए कमर कस लें। आंदोलन समय के साथ जोर पकड़ता गया। आंदोलनों के इतिहास में 04 नवंबर, 1974 का दिन अविस्मरणीय है, जब पटना में विशाल रैली होने वाली थी। कांग्रेसी सरकार ने पटना पहुँचने के सारे मार्ग अवरुद्ध कर दिये थे, यहाँ तक कि नदियों के तटों पर पहरा लगा दिया था। अस्वस्थ जयप्रकाश स्वयं सत्याग्रहियों का नेतृत्व कर रहे थे। कम से कम दो बार उनके सिर पर लाठी से प्राण घातक प्रहार किए गए। उनके कॉलर बोन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

पर गहरी चोट आयी। जयप्रकाश वहीं रात दस बजे तक बस में दूँसे गये सत्याग्रहियों के साथ धरने पर बैठे रहे। उन्होंने घोषणा की, "अब हमारी लड़ाई दिल्ली से है। अब हमें उसी के लिए संगठित होना है"।

जयप्रकाश ने 01 जनवरी, 1975 को संपूर्ण क्रांति के लिए समर्पित एक निर्दलीय, अर्द्धसैनिक छात्र युवा संगठन 'छात्र–युवा संघर्ष वाहिनी' की स्थापना की।

06 मार्च, 1975 को दिल्ली में निकली, जिसे 'पीपुल्स मार्च' का नाम दिया गया, वोट क्लब पर पहुँच कर एक विशाल जनसभा में बदल गई। दिल्ली के लिए यह एक अभूतपूर्व दृश्य था।

जयप्रकाश चाहते थे कि यह आंदोलन केन्द्रीकृत न रहे और इसका व्यापक विस्तार हो। इसी बीच इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के खिलाफ राज नारायण की रिट याचिका स्वीकार कर ली। अब पूरा विपक्ष 'जनता मोर्चा' नामक एक मोर्चे में गोलबंद होने लगा जिसके नेतृत्व के लिए जयप्रकाश को आमंत्रित किया गया। 25 जून को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक जनसभा आयोजित की गई जिसमें जयप्रकाश ने इंदिरा गांधी से इस्तीफे की मांग की और घोषणा की इस अभियान को ग्राम स्तर और जिला स्तर से केन्द्र स्तर तक ले जाना है। इसी समय श्री चन्द्रशेखर के नेतृत्व में कोई 60–70 सांसदों का एक दल जनता मोर्चा को समर्थन देने को तैयार हुआ। तब इंदिरा गांधी ने अपना अंतिम अस्त्र प्रयोग करते हुए उसी दिन यानि 25–26 जून, 1975 की रात में आपातकाल को घोषणा की और विपक्ष के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर देश के विभिन्न जेलों में डाल दिया गया। इसके सबसे पहले शिकार हुए – जयप्रकाश।

कारावास के दौरान जयप्रकाश का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा। उन्हें पी.जी.आई., चंडीगढ़ में भर्ती कराया गया। इनकी गिरफ्तारी की विश्व स्तर पर आलोचना की गई। नोबेल पुरस्कार विजेता नील बेकर ने 'फ्री जेपी' नामक अभियान चलाया और लगभग चार महीने के बाद 12 नवंबर, 1975 को उन्हें रिहा कर दिया गया। रिहाई के एक सप्ताह पूर्व उन्हें सूचना दी गई थी कि उनके दोनों गुर्दे स्थायी तौर पर खराब हो चुके हैं। गुर्दे की खराबी ने उन्हें अशक्त बना दिया और और उनका शेष जीवन डायलीसीस के सहारे हो गया।

18 जनवरी, 1977 को इंदिरा गांधी ने आपातकाल समाप्त करते हुए आम चुनाव की घोषणा की। नेतृत्व के लिए विपक्षी दलों ने कमजोर जयप्रकाश से अनुरोध किया तो उन्होंने शर्त रखी कि सभी विपक्षी दल विलीन होकर एक दल बना ले, अन्यथा मैं चुनाव अभियान से अलग रहूँगा। फलतः 23 जनवरी, 1977 को जनता पार्टी के गठन की घोषणा की गई। दो सप्ताह बाद 06 फरवरी, 1977 को रामलीला मैदान में जनता पार्टी की विशाल जनसभा आयोजित की गई, जिसमें लगभग दस लाख लोगों ने भाग लिया। इसमें राष्ट्रकवि दिनकर की कविता पढ़ी गई, "सिंहासन खाली करो कि जनता आती है"। जयप्रकाश ने भावुक होकर होकर कहा कि 'अपने मतदान का निर्भय होकर प्रयोग करें। वास्तव में यह लड़ाई लोकशाही और तानाशाही के बीच है"।

अस्वस्थ्य होते हुए भी जयप्रकाश ने पूरे देश में जनता पार्टी के पक्ष में जोरदार प्रचार किया। बंबई पहुँचने पर उनकी तबीयत अचानक खराब हो गई और उन्हें पुनः जसलोक अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। फिर भी वे जनता से कांग्रेस के खिलाफ मतदान करने की अपील करते रहे और परिणामतः जनता पार्टी भारी बहुमत से विजयी हुई। 24 मार्च 1977 को जयप्रकाश ने राजघाट पर बापू की समाधि के समक्ष जनता पार्टी के सभी नव निर्वाचित सांसदों को निःस्वार्थ भाव से जनसेवा की शपथ दिलाई। मोरारजी देसाई ने आश्वासन दिया कि ऐसा ही होगा। मोरारजी देसाई को जनता पार्टी संसदीय दल का नेता चुना गया और वे देश के पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने।

परन्तु जनता पार्टी के नेताओं की आपसी महत्वाकांक्षा और अंतर्विरोध के कारण पहली गैर कांग्रेसी सरकार ढ़ाई वर्ष में ही धराशायी हो गई और जयप्रकाश देखते रह गये। उन्होंने कहा, "बाग उजड़ गया। क्रांति का यह ज्वार भी व्यर्थ चला गया। .. देश ने एक और ऐतिहासिक अवसर खो दिया।" 08 अक्टूबर, 1979 को 77 वर्ष की आयु में इस महामानव का निधन हो गया।

राष्ट्र के लिए उनकी निःस्वार्थ सेवाओं का सम्मान करते हुए भारत सरकार ने मरणोपरांत देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जे.पी. की अंतिम इच्छा "मैं चाहता हूँ कि मैं अंतिम सांस पटना में लूं और मेरा अंतिम संस्कार भी पटना में हो" –आर्यावर्त, पटना, दिनांक 09.10.1979.
2. जयप्रकाश नारायण एक क्रांतिकारी संत – बिहार सरकार कला, संस्कृति एवं युवा विभाग संग्रहालय निदेशालय, पटना (बिहार)।
3. लोक नायक स्मृति भवन–सह–पुस्तकालय सिताब दियारा, सारण (छपरा) कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार संग्रहालय निदेशालय द्वारा संग्रहित, वर्ष – 2019.
4. महिला चरखा समिति, पटना, मद्रक– इम्प्रेशन पब्लिकेशन सालिमपुर अहरा 'बॉलिया', कदमकुआँ, पटना–3 (बिहार)

*****